विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग सप्तम ,विषय हिंदी

दिनांक- १/७/२०

अध्ययन-सामग्री .

सुप्रभात बच्चों,

हम पिछली दो तीन कक्षाओं से ***स्नेह*** *कहानी को पढ़ते आ रहे हैं ।कल की कक्षा में हमने पढ़ा कि निरुपमा के व्यवहार से उमा बहुत ही भावुक हो जाती हैं और अपने पति से पूछती हूं कि निरुपमा शशि के साथ ऐसा दुर्व्यवहार क्यों करती हैं ?तब उनके पति कहते हैं कि -भाभी उनसे बहुत प्रेम करती हैं परंतु प्रकट नहीं करती । अब आगे.....*

कहानी का शेष भाग :-

“नहीं ,” उमा ने कहा “,कठोरता ईर्ष्या में होती है ।एक दिन जब यातना सहते- सहते शशि मर जाएगा तब जीजी क्या उसे उस प्रेम को लेकर चाटेंगी ।“

कहते- कहते उमा की आंखें छल छला आई और उसी समय शशि की चीत्कार उसे सुनाई पड़ी । दोनों चौंक पड़े । उमा जल्दी से उस ओर चली गई, उसने देखा, निरुपमा शशि को मार डालने पर तुली है और बालक बिलबिला कर कह रहा है, इस बार माफ कर दो ताई ! अब नहीं करूंगा ।“

उमा से यह ना देखा गया उसने निरुपमा के पैर पकड़ लिए। बोली,” अब छोड़ दो जीजी !

निरुपमा ने रुक कर तीव्र दृष्टि से उमा को देखा, मानो कह रही हो, “ तुम्हें बीच में बोलने का क्या अधिकार है ?”.

उमा ने पूछा, “ बात क्या थी जीजी ?” क्रोध से भरी ने निरुपमा बोली, “तुम्हारे लाड़ की बात थी बहू । अब लड़का चोरी भी करेगा । मैं कहती हूं मेरे घर यह ना होगा । मैंने सवेरे पाँच रसगुल्ले गिने थे । अब चार हैं ।“

इतना कहकर क्रोध से धम धम करती हुई वह चली गई ।उमा ने देखा, उनकी आंखों में पानी था ।उसके हृदय को ठेस लगी और कठोर स्वर में उसने पूछा ,,” क्यों !

तूने रसगुल्ला चुराया था?”

शशि ने बिलखते हुए कहा , “चाची कल से भूखा था ।

तुमने परसों जो मिठाई दी थी उसके कारण ताई ने मुझे रोटी नहीं दी ।“ जोर जोर से रोने लगा, “ चाची बड़ी तकलीफ होती है, मुझे बचा लो ,मैं फिर चोरी ना करूँगा ।“

वह आगे ना बोल सका । संज्ञा ही न -सा होकर गिर पड़ा ।उमा ने यह सब देखा और चीख कर वह भी वहीं गिर पड़ी ।

और 3 दिन बाद-

उमा को बड़े जोर का बुखार चढ़ा हुआ था ।

अमूल्य को डर था कि कहीं उमा की बीमारी घातक ना हो । वह बार-बार बेहोश हो जाती थी ।वह गर्भवती थी । निरुपमा ने उसकी दशा देखकर कहा, "मैंने इसे कई बार मना किया अमूल्य, इस अभागे बालक की कष्ट की छाया है ।"

शेष कल.... 🌷🌷🌷🌷🌷🌷.

दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी कॉपी में लिखें ।.